v..kk HkkÅ lkBs ds dgkuh lkfgR; esa vfHkO;Dr fonzksg

Mk- iadk”k lnkf”ko lw;Zo”kh

सहयोगी पाध्यापक,

स्वातंत्र्य सैनिक सूर्यभानजी पवार महाविद्यालय, पूर्णा. जि. परभणी

अण्णा भाउ साठे अपने कहानियों के माद्यम से यथार्थवादी चेतना को अभिव्यक्त करनेवाले एक स” ाक्त और सफल रचनाकार है. उनके पात्र अन्याय अत्याचार के विरोध में विद्रोह करते है और न्याय,समता की मंगल कामना करते है. संघर्श यह अण्णा भाउ साठे के कहानी साहित्य का प्राणतत्व है. मराठी कहानी साहित्य में श्री.म.माठे और विभावरी f” ारुरकर जैसे साहित्यकारों ने आपनी रचनाओं के माद्यम से भाोशित पीडीत समाज का चि़त्रण किया है. अण्णा भाउ साठे के पूर्व मराठी कहानी साहित्य में मध्यमवर्गीय चेतना की अभिव्यक्ति हुई है. ह.ना. आपटे से ना.सी.फडके.वि.स.खांडेकर तक की कहानी लेखन की परंपरा मध्यमवर्गीय समाज का प्रतिनिधीत्व करती नजर आती है. अण्णा भाउ साठे ने पहली बार अपेक्षित नायक नायिकाओं को अपने कहानी का विशय बनाकर परंपरागत मराठी साहित्य पंरपरा को सुरंग लगाया. उनके पा़त्र अन्याय,अत्याचार का प्रतिकार करते हुए अपने अस्तित्व को निर्माण करते है. मनुश्य का भाोशण करनेवाली व्यवस्था नश्ट करना और नये समतावादी मूल्योंकी स्थापना करना यह अण्णा भाउ साठे के कहानी लेखन का उददे” य है.अपने नाटक उपन्यास कविता तथा कहानियों के माद्यम से उपेक्षित पा़त्रों के जीवन संघर्श के बीज मराठी साहित्य भूमी मे बोने वाले अण्णा भाउ पहले साहित्यकार है. अपने विश्णुपंत कुलकर्णी, बंडवाला, रामो” ाी, कोंबडी चोर, मरीआईचा गाडा, सापळा, रक्ताचा टिळा, धडयातील हाड, जिवंत काडतुस, डोंगराचा राजा, निळु मांग, तीन भाकरी, भुताचा वाडा, डोळे, स्म” ाानातील सोन, सुलतान फरारी, पैलवानाच गाव, सोन्याचा मनी, बुध्दाची भापथ, निखारा आदि कहानियों के मा़द्यम से मराठी साहित्य में उपेक्षित पात्रो को अभिव्यक्ती किया है. परंपरागत विचारों का विरोध करते हुए आधुनिक विचारों का स्वीकार करने वाले नायक–नायिका उनके कहानियों को वि” ोशता है. कुल 26 कहानीसंग्रह लिखकर मराठी कहानियों को मद्यमवागीय चेतना से बाहर निकालकर भाोशित पीडित वंचित समाज के नायक–नायिकाओं के माद्यम से मराठी साहित्य को समृध्द किया है. मेहनत मजदूरी करते हुए आत्मसम्मान के साथ जीनेवाला मनुश्य ही उनके साहित्य लेखन की उर्जा है. अपने कथा लेखन की भूमीका स्पश्ट करते हुए वे लिखते है कि में जो जीवन जीता हूॅं देखता हुॅं और अनुभव करता हूॅं वही मैं लिखता हुॅं कल्पना के पंख लगाकर मुझे उडने नही आता है.अण्णा

भाउ की साहित्य लेखन की इस भूमिका से स्पश्ट पता चलता है कि अण्णा भाउ ने जो जिवन देखा अनुभव किया वही अभिव्यक्त किया. उन्होने पाठक के रंजन के लिए नही बल्की हजारो वर्शो की विशमतावादी और गुलामी की व्यवस्था का भंजन करने के लिए साहित्य सृजन किया है.

अण्णाभाउ साठे के कुल 26 कथासंग्रह प्रकाि"त हुए है. सन 1957 में उनका पहला कथासंग्रह खुळंवाडी नाम से प्रकाि"त हुआ. जीवन जीने के लिए और आत्मसमान के लिए संघर्श करनेवाले व्यक्ती को अण्णा भाउ सर्वश्रेश्ठ मानते है. खुळंवाडी संग्रह के बंडवाला कहानी में उन्होने आपनी अस्मिता के लिए संघर्श करनेवाले तात्या का चित्रण किया है.ग्रामीण परिवे" ा में जमीन केवल एक धरती का टुकडा नही तो वह एक अस्मिता है. गॉव का इनामदार तात्या मांग के नाना से उनके भोलेपन का फायदा उठाकर 80 बिघा जमीन हडप लेता है. तात्या अपने पुरखों की जमीन वापिस लेने के लिए संघर्श करता है. इनामदार जमीन वापिस देने के लिए इन्कार करता है. तात्या और इनामदार के बिच संघर्श होता है.जमीन वापिस नही मिलती देखकर तात्या एक दिन इनामदार की हवेली जला देता है और व्यवस्था के विरोध में विद्रोह करता है. अण्णा भाउ ने ग्रामीण जीवन मे विश की तरह फैली जातीय विशमता का चित्रण अनेक कहानियों में किया है.

'सापळा' यह कहानी गॉव के बाहर रहनेवाले अछुतो के प्र" नों को उजागर करती है. डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के विचारो से प्रेरित हरिबा महार के नेतृत्व में संघटित दलित समाज दादा दे" ामुख का मरा हुआ बैल गॉव के बाहर फेकने से मना करते है. दलित समाज की संघटीत भाक्ति को देखकर गॉव के सभी जाति के लोग भी दादा दे" ामुख के नेतृत्व में दलितो को संकटो के घेरे डालते है. उन्हे और उनके जानवरो पर पाबंदिया लगायी जाती है लेकीन हरिबा महार अपनी चतुराई से गॉववालो का बिछाया जाल उनके उपर ही पलटा देता है. इस कहानी में हरिबा महार के नेतृत्व में दलित समाज विशम समाज व्यवस्था के विरोध में विद्रोह करता है. अंतिमतः इस कहानी में अण्णा भाउ ने दलित समाज की जीत बताई है. उनकी यह कहानी डॉ.आंबेडकर के विचारों से प्रेरित है.

भारत में धर्म व्यवस्था के ठेकेदारों ने कभी मनुश्य को मनुश्य के रुप में देखा ही नही. उॅच–निच, श्रेश्ठ–कनिश्ठ के तत्वो पर ही वर्णव्यवस्था खडी है. वर्णव्यवस्था ने समानता के पाठ कभी पढाये ही नही. तुम किसी से श्रेश्ठ हो और तुमसे कोई कनिश्ठ है यही विशमतावादी व्यवस्था का आधार रहा है. हर जाति अपने आपको श्रेश्ठ और दुसरे जाति को कनिश्ठ मानते आ रही है. 'उपकाराची फेड' इस कहानी में मलु धेड, लखु मांग, भांकर चमार, और मन्या धोबी इन चार अछुत जाति के पात्रो का चि़त्रण आया है जो चारो अछुत होने के बावजूद भी एक दुसरे को श्रेश्ठ कनिश्ठ समझते है. मलु धेड के जुते

को हाथ न लगाते हुए उसे दुरुस्त करने के लिए भांकर चमार उसे रापी दुर से फेकता है. डॉ.बाबसाहब आंबेडकर के विचारों से प्रेरित मलू को यह अपमान लगता है. भांकर को यह लगता है कि मैं मलु को रापी देकर उसपर एहसान कर रहा हुॅ. मलु भी यह ठाण लेता है कि एक न एक दिन मै तेरे एहसानों का बदला पुरा करुंगा. एक दिन भांकर चमार भी भैस मरती है तब मलु उसको गॉव के बाहर फेकने से मना करता है. सारा गॉव एकत्रित आकर जिंदा रहना है तो भैस को ठिकाणे लगाने की धमकी देता है. मलु व्यवस्था के साथ विद्रोह करता है और भांकर के एहसान को चुकाने के लिए मृत जानवरों को खिंचने वाले सामान को उसकी और फेककर बदला लेता है. दोंनो अस्पृ" य होकर भी उनमें जो उॅच–निचता के विचार यहॉ की वर्णव्यवस्था ने बोये है उसका पर्दाफा" ा यह कहानी करती है. सभी अस्पृ" य जातियॉ की व्यथा–वेदना एक होकर भी उनके मन में कैद जातियता की भावना नश्ट नही होती है. अण्णा भाउ साठे ने मलु धेड के माद्यम से जातिव्यवस्था पर प्रहार किया है.

अण्णा भाउ साठे ने अनेक नायिका प्रधान कहानियॉ लिखी है. स्त्री–पुरुश समानता के विचार उन्होने अपने कहानियों मे व्यक्त किये है. उनकी नायिकाऍ पुरुशसत्ताक व्यवस्था का विरोध करती हुई समता का गीत गाती है. वह पुरुशों के कंधे से कंधा मिलाकर अन्याय अत्याचार के विरोध में विद्रोह करती है. नारी स्वतंत्रता और उसके भील को अण्णा भाउ ने मराठी साहित्य में स" ाक्तता के साथ अभिव्यक्त करके नारी केवल उपभोग की वस्तु नही इस नयी परंपरा का बीजरोपन किया. उन्होने नारी को कभी विद्रुप नही किया. नारी अपने अधिकारों के लिए और अन्याय अत्याचार के विरोध के लिए संघर्श करती है. अण्णा भाउ की नायिका अपने नायक के साथ किसी बगीचे मे प्रियकर के हाथ में हाथ पकडकर आनंद के साथ घुमती नही है तो वह अपने प्रियकर के कंधे से कंधा लगाकर आजादी के आंदोलन में और व्यवस्था के विरोध में विद्रोह करती नजर आती है. अण्णा भाउ साठे ने आवडी, आबा, फुला, मंगला, चित्रा, वैजयंता, मंजुला आदि नायिका आदि नायिकाओंने व्यवस्था के विरोध विद्रोह किया है. 'बिलवरी' यह अण्णा भाउ साठे की एक प्रेमकहानी है. दे" ामुख के घर काम करनेवाला अमीन और बिलवरी की यह प्रेम कहानी है. दे" ामुख बिलवरी को पाने के लिए कितनी भी संपत्ती देने के लिए तैयार होता है. लेकीन बिलवरी अपने दरिद्री प्रियकर को धोखा नही देती है. वह अपने प्रेम को बचाने के लिए अपनी बिरादरी और परिवार को संकट मे डालती है. सत्ता और संपत्ति के आगे न झुककर अपने प्रेम के लिए वह संघर्श करती है. ऐसी अनेक विद्रोही नायिकाऍ अण्णाभाउ ने साहित्य में अभिव्यक्त कीया है.

अण्णा भाउ ने अपनी कहानियों के माद्यम से हजारों वर्शो से अज्ञान और अंधकार में जीवन जी रहे बहुजन समाज मे वैज्ञानिक दृश्टिकोन जागृत किया है. वर्ण व्यवस्था का f" ाकार बना समाज अंधश्रध्दा फैलानेवाले विचारों के साथ जी रहा है. 'मरिआईचा गाडा ' नामके कहानी के माद्यम से अंज्ञान तथा अंधकार में जी रहे समाज को ज्ञान तथा विचारों की रो" ानी देने का कार्य अण्णा भाउ ने किया है. गॉव में प्लेग की बिमारी आने के कारण परंपरागत विचारों को माननेवाले सटवा, केरु आबा और म्हादबा जैसे लोग देवी मरीआई त्यौहार मनाते हुए गॉव पर आया संकट दुर करणे के लिए मरीआई की गाडी गॉव के बाहर भेजने की योजना बनाते है. आधुनिक विचारों को माननेवाले नाना उनका विरोध करते है. और गॉववालों को स्वच्छता का महत्व बताते है. अंतिमतः नये विचारों के नाना की जीत हो जाती है और पुराने विचारों का पराभव इस कहानी में परंपरागत और आधुनिक विचारों का संघर्श होकर नये विचारों की जीत होती है. सामाजिक परिवर्तन की दृश्टि से अण्णा भाउ साठे के द्ववारा लिखी गयी यह कहानी अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है.

अपने कहानियों के माद्यमसे अण्णा भाउ ने सामाजिक भोशण, अन्याय, अत्याचार, दरिद्रता, विशमता, अंधश्रध्दा, दैववाद, जातीव्यवस्था का यर्थाथ चित्रण किया है. समाज में व्याप्त सामाजिक और आर्थिक विशमता देखकर उनका मन अस्वस्थ होता है. समाज का एक वि" ाश्ट वर्ग सत्ता और संपत्ति के बलपर सामान्य लोंगो का भोशण कर रहा है यह देखकर अण्णा भाउ के मन में व्यवस्था के विरोध में चीड निर्माण होती है. उनका लेखन मानवमुक्ति के लिए लिखा गया है. उनके नायक नायिका अन्याय–अत्याचार के विरोध में विद्रोह करते हुए मानवता की कामना करते है. उनके कहानियों के नायक–नायिका मानवी मुल्यो पर प्रेम करते है. इन्सानियत की भावना और मानवी मूल्यों की स्थापना के लिए उनके पात्र जान देने के लिए भी तैयार होते है और जान लेने के लिए भी. अण्णा भाउ के कथा साहित्य मे मार्क्सवादी चेतना के साथ–साथ आंबेडकरवादी चेतना भी मिलती है. एक ओर वे आपनी कहानियों में आर्थिक विशमता का चि़त्रण स" ाक्तता के साथ करते है तो दुसरी ओर सामाजिक विशमता का चित्रण भी उतनी ही ताकत से करते है.

I anHkZ %

1.अण्णा भाउ साठे : साहित्य मूल्यामापन,
डॉ.माधव गादेकर, साद प्रका" ान, औरंगाबाद

2.विद्रोही कलावंत अण्णा भाउ साठे
डॉ.राजे" वर दुडुकनाळे, लोकायत प्रका" ान, सातारा

3.अण्णा भाउ साठे : एक सत्य" ोधक,

डॉ. मच्छिंद्र सकटे, प्रज्ञा प्रका" ान, कोल्हापूर

4.अण्णा भाउसाठे : समाजविचार व साहित्य विवेचन

डॉ.बाबुराव गुरव, लोकवाङःमय गृह मुंबई

5.अण्णा भाउ साठेः प्रतिनिधिक कथा,

डॉ.एस.एस.भोसले, लोकवाङःमय गृह मुंबई.